International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-06-2020; Accepted: 16-06-2020; Published: 03-07-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 07-09

विदेशों में हिन्दी पत्रिकाओं का विकास

सोनाली नरगुंदे [1], मनीष काले [2]
[1] एसोसिएट प्रोफेसर, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] अतिथि व्याख्याता, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
पत्र–पत्रिकाएं आज विष्व के हर देष के लोगों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गयी है। अफ्रीका के उन देषों को छोड़कर जहां प्रेस का अस्तित्व है ही नहीं , विष्व के अन्य देषों में दैनिक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की संख्या में बेतहाषा वृद्धि हुई है। समाचार पत्रों के साथ ही पत्रिकाओं ने भी अपना एक मुकाम बनाया है। आज विष्व के कई देषों में विष्व स्तरीय पत्रिकाओं को प्रकाषन हो रहा है, जिसमें टाइम, रीडर डायजेस्ट, प्ले बॉय प्रमुख है। हिन्दी भाषा की पत्रिकाओं की बात करें तो विदेशों में भी इनका अपना एक मुकाम है। एक बड़ा पाठक वर्ग हिन्दी पत्रिकाओं का विदेशों में खड़ा हुआ है, जो स्थायी है। कई देशों में तो हिन्दी पत्रिकाओं के बड़े–बड़े स्टॉल अलग से लगाये जा रहे है और उनकी बिक्री भी हो रही है। समय के साथ विदेशी भाषा वाले स्टॉलों पर हिन्दी पत्रिकाओं की उपस्थिति हिन्दी पत्रिकाओं के महत्व और कद को बताती है।

मूल शब्द: हिन्दी, पत्रिकाएं, विदेश

प्रस्तावना
ब्रिटेन में 1620 में और अमेरिका में 1690 में विष्व के पहले समाचार पत्र प्रकाषित हुए थे, तब से पत्रकारिता की दुनिया में इतनी क्रांतियां हो गई है कि आज उनका स्वरूप बिलकुल ही बदल गया है। ये क्रांतियां समाचार पत्र–पत्रिकाओं की तकनीक, बनावट, वितरण और विषय सामग्री आदि क्षेत्रों में आई है। ब्रिटिष दार्षनिक फ्रांसिस बेकन की ने प्रिंटिंग प्रेस को एक चमत्कार कहा है। उनका कहना है, प्रिंटिंग प्रेस तीन आविष्कारों में से एक थी, जिन्होनें पूरे विष्व में एक बड़ा बदलाव किया। चेहरे हो या फिर चीजें, सभी में इसके कारण बदलाव आया और बदलाव जल्द ही विकास से जुड़ना नजर आया। प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार से पहले किताबों को हाथ से प्रतिलिपि बनाकर कॉपी करना पड़ता था। जब जोहान्स गटेनबर्ग ने 1440 में प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया, तब उन्होंने मानव इतिहास में पहली बार ज्ञान के लिये बड़े पैमाने पर उत्पान करने का एक तरीका बनाया। इसके आगमन की एक शताब्दी के भीतर बाइबल और धार्मिक सामग्रियों की प्रिंटिंग शुरू हुई । जल्द ही प्रिंटलेट पंचाग और न्यूजलेटर प्रिंट करने के लिए प्रिंटिग प्रेस का इस्तेमाल किया जाने लगा।
विष्व पत्रिका का इतिहास करीब 350 साल पुराना है। पत्रिकाएं सूचना और मनोरंजन का यह एक मुख्य माध्यम रही है। विष्व में पत्रिका के प्रकाषन का श्रेय जर्मनी को जाता है प्रारंभ में पत्रिकाओं की छपाई लकड़ी के ब्लॉकों से की जाती थी। छपाई का यह एक प्राचीन माध्यम थां। प्रत्रिकाओं के उत्पादन में वृद्धि हुई तो इन लकड़ी के ब्लॉकों को ज्यादा संख्या में एक लाईन के रूप में स्थापित किया गया और इससे कम समय में अधिक पत्रिकाओं का प्रकाषन किया जाने लगा। तकनीक ने पत्रिकाओं के विकास को पंख लगा दिये। 1663 में जर्मनी में पहली पत्रिका का प्रकाषन किया, जो पूरी तरह से दार्षनिक और साहित्यिक पत्रिका थी। इसका नाम एरबेलिच मोनाथ्स अनर्ट्रेजेंन (म्तइंनसपबी डवदंजी न्दजमततमकनदहमद) था। यह सामान्य विषयों वाली पत्रिका थीं, जो जर्मन धर्मषास्त्री और कवि जोहान रिस्ट ने लिखी थी। यह पत्रिका पांच सालों तक चली और इंग्लैंड, फ्रांस और इटली मे प्रसिद्ध हुई। युवा वर्ग ने इस पत्रिका को पंसद किया, जिसमें विद्वानों के लेखों को प्राथमिकता दी गई थी।

यूरोप में पत्रिकाओं का प्रवेश
1672 में फ्रेंच लेखक और नाटककार जीन डोननेऊ डे विजे ने ली मर्क्यूर गैलांट का प्रकाषन किया, जिसमें अदालत की घटनाओं के साथ ही थियेटर और साहित्य विषय से जुड़ी सामग्री का विषेष प्रकाषन किया जाता था। समाचारों, गीत, लघु छंद, गपषप को भी इसमें स्थान दिया गया । इसमें गंभीर विषयों की बजाए मनोरंजन को प्राथमिकता दी गई। इसके बाद भी पत्रिका ने कम समय में ही अपना स्थान बना लिया। पत्रिका की अवधारणा को पूरे यूरोप में अपनाया गया और इसी आधार पर यूरोप में पत्रिकाओं का प्रकाषन किया गया। पहली महिला पत्रिका लेडीज मर्क्यूरी का प्रकाषन 1693 में हुआ, जिसे लंदन के प्रकाषन जॉन डनटन ने निकाला था। लंदन से प्रकाषित इस पत्रिका में प्रेम, शादी, व्यवहार, पोषाक और महिला सेक्स संबंधी हास्य सामग्री को प्राथमिकता से प्रकाषित किया गया। हालाकि इसका जीवन मात्र चार सप्ताह का ही था।

आधुनिक पत्रिकाओं की अवधारणा
1700 के दषक में साक्षरता और बौद्धिक कौषल में वृद्धि हुई। खासकर महिलाओं के बीच ज्ञान के लिए सोसायटी की भूख ने एक लोकप्रिय सांस्कृतिक मंच बनने के लिए पत्रिकाओं को सक्षम किया। आधुनिक पत्रिकाओं का मंच तैयार करने में तीन निबंध पत्रिकाओं का महत्पूर्ण योगदान रहा। डैनियल डिफे की समीक्षा 1704 में प्रकाषित हुई, वहीं सर रिचर्ड स्टील की टाटलर 1709 में बाजार में आयी। इसी कड़ी में एडिसन और स्टील की द स्पक्टेटर 1711 में प्रकाषित हुई। हालांकि इस दौर में पत्रिकाओं का प्रकाषन सप्ताह में कई बार होता था। इस कारण ये समाचार पत्रों जैसे ही दिखते थे, लेकिन सामग्री का प्रकाषन पत्रिकाओं की तरह था। समीक्षा पत्रिका में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में बारे में प्रकाषित निबंधों का खुलासा किया जाता था वहीं टाटलर और स्पेक्टेटर ने नैतिकता को प्रोत्साहित किया। इन दोनो पत्रिकाओं ने षिष्टाचार, बुद्धि और विचारों को प्रधानता दी। समाचार पत्रों में मिली त्वरित जानकारी और पुस्तकों में पाये जाने वाले गहन शोध के बीच इन तीनों पत्रिकाओं ने सेतु का काम किया इन पत्रिकाओं को आधुनिक पत्रिकाओं की अवधारणा

का मंच कहा जा सकता है।

द स्कॉट्सः आम आदमी की पत्रिका

सामान्य रुचि की पहली पत्रिका का प्रकाशन 1731 में लंदन से हुआ था। जेंटलमैन नाम से निकली इस पत्रिका में कथा, कविता, राजनीति के साथ ही समसामयिक विषयों के लेखों को प्राथमिकता दी गई । इस पत्रिका ने विश्व पत्रिकारिता में अपनी अलग पहचान बनायी। पत्रिका की सामग्री उसकी सफलता का आधार थीं, लेकिन इसकी अधिक लागत सबसे बड़ी चुनौती थी। मुद्रण लागत अधिक थी और मुद्रित प्रतियों की संख्या एक लाख से ज्यादा नहीं हो सकती थी । कारण था मशीन के माध्यम से बडी मात्रा में कागज को निचोड़ना तकनीकी रुप से असंभव था। साथ ही वितरण एक बडी समस्या थी क्योंकि बड़ी दूरी पर बड़ी संख्या में स्थानांतरण मुश्किल था। लॉयड लिस्ट नाम की पत्रिका कॉफी की दुकान पर सबसे पहले इंग्लैंड में 1734 में उपलब्ध करवायी गयी। बाद में यह समाचार पत्र के रुप में प्रकाशित होने लगी। द स्कॉट्स नाम से इंग्लैंड से 1739 में पत्रिका शुरु हुयी। यह पहली पत्रिका थी, जिसमें आम पाठकों की रुचि को ध्यान में रखा गया। इसमें ऐसे विषयों पर सामग्री का प्रकाशन किया जाता था, जो आम पाठक की रुचि के थे। 1770 में लंदन से पुस्तक विक्रेता जॉन कुटी ने एक लंबे समय तक स्थायी महिला पत्रिका का प्रकाशन किया। द लेडी के नाम से निकलने वाली इस पत्रिका ने पूरे ब्रिटेन में धूम मचा दी। 18वीं शताब्दी के अंत तक संयुक्त राज्य अमेरिका में 10 से अधिक पत्रिकाएं थी। सबसे प्रभावशाली शुरुआती अमेरिकी पत्रिका पेनसिल्वेनिया थी, जिसे थॉमस पेन और मैसाचुसेट्स द्वारा संपादित किया गया। हालाँकि ये पत्रिका इतनी महंगी थी कि केवल अमीर लोग ही खरीद सकते थे ।

मध्यम वर्ग में पहुंची पत्रिका

19वीं शताब्दी में एक बड़ा बदलाव आया। शताब्दी के मध्य तक पत्रिकाएं अमीर लोगों की परिधि को छोड़कर मध्यम वर्ग के लोगों तक भी पहुंच गयी थी, लेकिन इसकी लागत एक बडी चुनौती थी । इस शताब्दी में पत्रिकाओं की कीमत में कटौती करने के लिए ठोस प्रयास शुरु किये गये। इसका समाधान विज्ञापन के रुप में निकाला गया। 1853 तक विज्ञापनों की ज्यादा बढोत्तरी नहीं हुयी थी। कारण विज्ञापनों पर लगा हुआ विशेष टैक्स था। टैक्स हटने के बाद विज्ञापनों में भारी बढोत्तरी हुई, ऐसा भी नहीं था क्योंकि कई बड़े पत्रिका प्रबंधकों ने विज्ञापनों से दूरी बना रखी थी । रीडर डायजेस्ट जैसी बड़ी पत्रिकाओं ने 1955 तक विज्ञापनों को प्रकाशित नहीं किया । शताब्दी के अंत में मुद्रण प्रणाली में आए बदलाव ने इस दिशा में क्रांति ला दी । रोटरी प्रेस के आविष्कार के साथ ही मुद्रित प्रतियों की संख्या में वृद्धि हुई और मुद्रण कीमत में भी कमी आयी। परिणाम यह हुआ कि पत्रिकाएं अमीरों की सीमा से बाहर आकर आम आदमी की पहुंच की में आ गई ।

20वीं शताब्दी पत्रिकाओं के विकास के लिए महत्वपूर्ण रही । शुरुआत में ही मानो क्रांति आ गई । अमेरिका में कई समाचार पत्रों के मालिक विलियम राडोल्फ हर्स्ट ने पत्रिकाओं के प्रकाशन को नई उचाईयां दी । हर्स्ट से अपने गुरु यूसुफ पुलिटूज़र के साथ पाठकों की रुचि को समझा और उसी अनुसार पत्रिकाओं का प्रकाशन किया । आजादी के लिए क्यूबा युद्ध के दौरान हर्स्ट और पुलिटूजर ने अपने समाचार पत्रों में युद्ध में अत्याचारों और भूख से मरने वालों सैनिकों के चित्र प्रकाशित किये । घटनाओं को सनसनीखेज बनाकर पेश करने का दृष्टिकोण यही से शुरु हुआ। हर्स्ट से अपने साम्राज्य को गुड हाउसकीपिंग, नेशनल जियोग्राफिक और हार्पर पत्रिका के माध्यम से विस्तारित किया। बाद में ये तीनों पत्रिकाएं जमकर पसंद की गयी और पत्रिकाओं के इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी ।

1900 के दशक में पत्रिकाओं की विषयवस्तु में बदलाव आया और वे जीवन से जुड़े सामान्य विषयों पर ध्यान देने लगे। 1922 में विलियम रॉय डेबिट वालेस ने रीडर डायजेस्ट की स्थापना की । पत्रिका में अमेरिका संस्कृति, कॉर्टून और दिलवाली कहानियों के बारे में सामग्री प्रकाशित की जाती थी। रीडर डायजेस्ट अमेरिका में कई वर्षों से बेस्ट मार्केटिंग मैगजीन है।

20वीं शताब्दी के शुरुआती दौर में ही न्यूयॉर्क का नाम आधुनिक पत्रिका कला निर्देशन के रुप में स्थापित हो चुका था। विशेष रुप से मैडिसन एवेन्यू उस युग के सबसे बड़े स्थान के रुप में था, जहां से पत्रिकाओं को नई पहचान मिली। मेनहट्टन एक नई पीढी के डिजाइनरों और कला निर्देशकों का जन्म स्थान था, जिन्होंने डिजाइन और विज्ञापनों को स्थापित किया। यहां कई इमारतों में क्रांतिकारी दिग्गजों ने काम किया जैसें–हार्पर के बाजार के लिए एलेक्सी ब्रोडोविच, फॉच्यून के लिए लियो लियोननी, यंग एंड रुबिकाम के लिए स्टीव फ्रैंकफट, हेर्नेस के लिए हर्ब लुबलीन, एस्क्वायर के लिए हेनरी बल्फए, प्लेबॉय के लिए कला पॉल और कोंडे नेस्ट के लिए अलेक्जेंडर लिबरमेन।

विदेशों में हिंदी पत्रिकाएं

भाषा की दृष्टि से देखें तो हिंदी विश्व भाषाओं में तीसरे स्थान पर है। यह भाषा भारत उपमहाद्वीप में तो आसेतु व्याप्त है, जबकि इसके अतिरिक्त दक्षिण–पूर्व एशिया, पूर्व और दक्षिण अफ्रीका, यूरोप के कई देशों के साथ ही अमेरिका, कनाडा के साथ ही विश्व के कई देशों में विद्यमान है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जो संबंध बनाये है, उसमें हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। देश के विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों ने हिंदी का एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम स्वीकार करके उसमें हिंदी भाषा को एक समुचित स्थान दिया है। इसका परिणाम यह हुआ की यूरोप और अमेरिका सहित कई देशों में हिन्दी के सैकड़ों विद्यार्थी हो गए । हिंदी भाषा के बारे में जानने के लिए विदेशों में बसे भारतीयों का एक सशक्त माध्यम था हिंदी पत्र–पत्रिकाएं। विदेशों में बसे भारतीयों की इसी ललक ने विदेशों में हिंदी पत्रकारिता को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके साथ ही जीविकापार्जन के लिये भारत से बड़ी संख्या में लोग विदेशों में बसे जिसमें श्रमिकों से लेकर उच्च अधिकारी तक की श्रेणी के लोग थे। धीरे–धीरे प्रवासी भारतीयों का एक विशाल समुह विदेशों में बस गया जिसने भी हिंदी पत्रकारिता को यहां पनपने का पूरा मौका दिया। मारीशस, फीजी, त्रिनिदाद, ब्रिटिश गुयाना जैसे देशों में तो हिंदी भाषी लोग की ही बहुलता है। मारीशस में करीब 60 प्रतिशत लोग भारतीय है और 80 प्रतिशत लोग हिंदी जानते है। फीजी में 50 प्रतिशत त्रिनिदाद में 45 प्रतिशत और गुयाना में 52 प्रतिशत लोग हिंदी जानते है। श्रीलंका, बर्मा, नेपाल, थाईलैंड इंडोनेशिया जैसे देश भी हिंदी से अछूते नहीं है।

विदेशों में हिंदी पत्रकारिता को करीब 100 साल से अधिक समय हो गया है। विदेश में प्रकाशित होने वाला पहली हिंदी पत्रिका हिंदोस्थान थी। यह पूर्वी उत्तर प्रदेश के कालाकांकर राज्य के राजा श्री रामपाल सिंह के प्रयासों से लंदन से निकली थी। यह त्रैमासिक पत्रिका थी, जो 1882 में प्रकाशित हुयी थी। प्रारंभ में यह हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू भाषा में निकली। 1885 में यह साप्ताहिक पत्र के रुप में निकलने लगी और बाद में दैनिक हो गयी। साप्ताहिक होने के बाद यह कालाकांकर से निकलती थी। आरंभ में इसकी ५०० प्रतियों निकलती थी, जो बाद में बढ़ी। हजारों रुपया का घाटा सहने के बाद भी यह करीब २६ सालों तक चली। महामना मालवीय, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त इसके सम्पादक रहे। यूरोप की प्रथम त्रैमासिक पत्रिका थी–हिंदुस्तान। दूसरी पत्रिका थी– प्रवासिनी । कुछ समय बाद

ये बंद हो गयी।

यह त्रैमासिक पत्रिका थी, जो लम्बे समय तक पाठकों की पसंद रही। कामनवेल्थ आफ नेशंस की ओर से वर्तमान राष्ट्रकुल नामक पत्रिका प्रकाशन किया गया यह पत्रिका लंदन से निकली। बर्मा से ब्रम्हाभूमि, लाहौर से क्षत्रिय पत्रिका शुरु हुयी। त्रिनिदाद से ज्योति नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। फिजी और मारीशस में तो हिंदी पत्रकारिता सर्वाधिक प्रचलित रही। मारीशस की बात यहां का करें तो आर्य समाज एक पाक्षिक पत्र आर्योदय भी प्रकाशित हुआ। धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में अच्छा काम कर रहा है। यह 16 पृष्ठों पत्र है का, जिसमें आर्य समाज की गतिविधियों, समाज के प्रमुख व्यक्तित्वों के परिचय के साथ ही सामाजिक परिवर्तनों पर भी प्रमुखता से समाचार प्रकाशित किये जाते है। इसके साथ ही मारीशस से हिंदी भाषा में सार्वाधिक साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है। हिंदी भाषा के लिये काम करने वाली हिंदी परिषद त्रैमासिक अनुराग नाम की एक ब्रैमासिक पत्रिका शुरु की थी । फिजी मासिक पत्र सनातन संदेश का प्रकाशन हुआ।

इंटरनेट के प्रवेश ने पत्र–पत्रिकाओं को लेकर नए सवाल खड़े कर दिये। मुद्रित पत्रिकाओं की जगह ऑनलाइन पत्रिकाओं ने लेना शुरु किया। साइबर पीढ़ी की शुरुआत के साथ ही भविष्य वक्ताओं ने पत्रिकाओं की मौत की भविष्यवाणी की थी, लेकिन ऐसा संभव नहीं लगता है। लोकप्रिय भले ही ऑनलाइन संस्करण ही किये जा रहे हो, लेकिन ऊंगलियों के बीच कागज की उस भावना को प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है, जो मुद्रित पत्रिकाओं में होती है। विदेशों में भी हिन्दी पत्रिकाओं ने लोगों के जीवन को आकार दिया है, सोच दी है, जो आगे निरंतर जारी रहेगी आज दुनिया में हजारों पत्रिकाएं है। मुद्रित प्रेस के आगमन के करीब ६०० साल बाद पत्रिकाएं पूरे विश्व में चीजों की प्रकृति को बदल रही है।

विदेशों में स्थानीय भाषाओं के विकास के बीच हिन्दी भाषा ने अपना एक मुकाम बनाया है और हिन्दी पत्रिकाओं की भूमिका इसमें महत्वपूर्ण रही है। विदेशों में जहां हिन्दी भाषा की पत्रिकाओं को जगह मिल रही है, उससे तो भविष्य की संभावनाएं तो और भी ज्यादा प्रखर होती नजर आ रही है। विदेशों में बसे भारतीयों ने हिन्दी पत्रिकाओं के महत्व को नया मुकाम दे दिया है।

संदर्भ सूची

1. वैदिक, वी.,(1997). हिंदी पत्रकारिता विविध आयाम, भाग–1. हिंदी बुक सेंटर. नई दिल्ली.
2. जोशी, एस., (1986). हिन्दी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. जयपुर.
3. पंत, एन., (2002). पत्रकारिता का इतिहास. तक्षशिलाा प्रकाशन. नई दिल्ली.
4. सेंगर, एस.,(2006). पत्रकारिताः कल और आज. आविष्कार प्रकाशन. नई दिल्ली.
5. शर्मा, ए., (2006). आधुनिक पत्रकारिताः चुनौतियां और संभावनाएं. डायमंड पॉकेट बुक्स प्रायवेट लिमिटेड. नई दिल्ली.
6. बोकिल, ए., (2018). टाइम मैगजीन का बिकना और सूचना को ज्ञान में बदलना. ऑचलिक पत्रकार. भोपाल.
7. शर्मा, के., (2007). भूमंडलीकरण और मीडिया. ग्रंथ अकादमी. नई दिल्ली.